॥ श्रीअवधूतस्तोत्रम् ॥

श्लोक १

नित्यानन्दाय गुरवे शिष्यसंसारहारिणे।
भक्तकार्यैकदेहाय नमस्ते चित्सदात्मने॥

मैं उन श्रीगुरुदेव नित्यानन्द को नमस्कार करता हूँ
जो अपने शिष्यों को जन्म और मृत्यु के चक्र से बचाते हैं,
जिन्होंने अपने भक्तों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए
देह धारण की है और जो चित्स्वरूप तथा सत्स्वरूप हैं।

श्लोक २

निर्वासनं निराकाङ्क्षं सर्वदोषविवर्जितम्।
निरालम्बं निरातङ्कं नित्यानन्दं नमाम्यहम्॥

जो वासनाओं से रहित हैं, आकांक्षाओं से रहित हैं,
जो सभी दोषों से रहित, आलम्बनरहित और निर्भय हैं,
उन श्रीनित्यानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक ३

निर्ममं निरहङ्कारं समलोष्ठाश्मकाञ्चनम्।
समदुःखसुखं धीरं ह्यवधूतं नमाम्यहम्॥

जिनकी किसी भी पदार्थ में ममता नहीं है, जो अहंकार रहित हैं,
जिनकी दृष्टि में पत्थर, लोहा और सोना समान है,
जो सुख-दुःख में समतायुक्त हैं, जो अत्यन्त धैर्यवान हैं,
उन अवधूत को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक ४

अविनाशिनमात्मानं ह्येकं विज्ञाय तत्त्वतः।
वीतरागभयक्रोधं नित्यानन्दं नमाम्यहम्॥

"आत्मा अविनाशी है, क्योंकि यह एकमेव है"—इस सत्य को जिन्होंने जान लिया है,
जो राग, भय और क्रोध से रहित हैं,
उन श्रीनित्यानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक ५

नाहं देहो न मे देहो जीवो नाहमहं हि चित्।
एवं विज्ञाय सन्तुष्टं ह्यवधूतं नमाम्यहम्॥

"मैं देह नहीं हूँ, न ही देह मेरी है; मैं जीव नहीं हूँ, मैं तो चित्स्वरूप हूँ,"
ऐसा जानकर जो सदा सन्तुष्ट हैं,
उन अवधूत को मैं प्रणाम करता हूँ।

श्लोक ६

समस्तं कल्पनामात्रं ह्यात्मा मुक्तः सनातनः।
इति विज्ञाय सन्तृप्तं नित्यानन्दं नमाम्यहम्॥

"समस्त ब्रह्माण्ड कल्पनामात्र है,
केवल आत्मा ही है जो सदा-सर्वदा मुक्त और सनातन है,"
ऐसा जानकर जो तृप्त हैं,
उन श्रीनित्यानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक ७

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं कामसङ्कल्पवर्जितम्।
हेयोपादेयहीनं तं ह्यवधूतं नमाम्यहम्॥

ज्ञानरूपी अग्नि से जिनके कर्म भस्म हो चुके हैं,
जो कामना और संकल्प से रहित हैं,
जिनके लिए न कुछ ग्राह्य है और न ही कुछ त्याज्य है,
उन अवधूत को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक ८

स्वभावेनैव यो योगी सुखं भोगं न वाञ्छति।
यदृच्छालाभसन्तुष्टं नित्यानन्दं नमाम्यहम्॥

जो स्वभाव से ही योगी हैं, भोग-सुख की जिन्हें इच्छा नहीं है
और ईश्वरेच्छा से प्राप्त पदार्थों से जो सन्तुष्ट हैं,
उन श्रीनित्यानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक ९

नैव निन्दाप्रशंसाभ्यां यस्य विक्रियते मनः।
आत्मक्रीडं महात्मानं ह्यवधूतं नमाम्यहम्॥

किसी भी प्रकार की निन्दा और स्तुति से जिनके मन में विकार उत्पन्न नहीं होता,
जो आत्मक्रीड़ा में मस्त रहते हैं,
उन महात्मा को, उन अवधूत को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक १०

नित्यं जाग्रदवस्थायां स्वप्नवद् योऽवतिष्ठते।
निश्चिन्तं चिन्मयात्मानं नित्यानन्दं नमाम्यहम्॥

जो नित्य ही जाग्रत-अवस्था में होते हुए भी ऐसे रहते हैं जैसे स्वप्न में हों,
जिनका मन निश्चिन्त और चिन्मयस्वरूप है,
उन श्रीनित्यानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक ११

द्वेष्यं नास्ति प्रियं नास्ति नास्ति यस्य शुभाशुभम्।
भेदज्ञानविहीनं तं ह्यवधूतं नमाम्यहम्॥

जिन्हें न किसी से द्वेष है और न ही प्रीति, जिनके लिए कुछ भी
शुभ या अशुभ नहीं, जो भेदज्ञान से रहित हैं,
उन अवधूत को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक १२

जडं पश्यति नो यस्तु जगत्पश्यति चिन्मयम्।
नित्ययुक्तं गुणातीतं नित्यानन्दं नमाम्यहम्॥

जो जगत के किसी पदार्थ को जड़ नहीं समझते, अपितु जगत को
चिन्मयरूप में देखते हैं, जो 'नित्य' से युक्त हैं और गुणातीत हैं,
उन श्रीनित्यानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक १३

यो हि दर्शनमात्रेण पवते भुवनत्रयम्।
पावनं जङ्गमं तीर्थं ह्यवधूतं नमाम्यहम्॥

जो दर्शनमात्र से तीनों लोकों को पवित्र करते हैं;
जो चराचरस्वरूप हैं और स्वयं ही समस्त तीर्थ हैं,
उन अवधूत को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक १४

सर्वपूज्यं सदा पूर्णं ह्यखण्डानन्दविग्रहम्।
स्वप्रकाशं चिदानन्दं नित्यानन्दं नमाम्यहम्॥

जो सभी जनों के पूज्य, सर्वदा पूर्ण हैं,
जो आनन्दमूर्ति हैं, अखण्ड हैं,
जो स्वयंप्रकाशित हैं, चिदानन्द में रमण करने वाले हैं,
उन श्रीनित्यानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक १५

निष्कलं निष्क्रियं शान्तं निर्मलं परमामृतम्।
गणेशपुरीवासिनं ह्यवधूतं नमाम्यहम्॥

जो अविभाज्य हैं, क्रियारहित, शान्त, निर्मल, परम अमृतमय हैं,
गणेशपुरी में वास करने वाले उन अवधूत को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्लोक १६

योगपूर्णं तपोमूर्तिं प्रेमपूर्णं सुदर्शनम्।
ज्ञानपूर्णं कृपामूर्तिं नित्यानन्दं नमाम्यहम्॥

जो योग में पूर्ण हैं, तप की साक्षात् मूर्ति हैं, प्रेममय हैं,
जिनके दर्शन आनन्ददायक हैं,
जिन्हें पूर्ण ज्ञान है, जो कृपा की साक्षात् मूर्ति हैं,
उन श्रीनित्यानन्द को मैं नमस्कार करता हूँ।

॥ सद्गुरुनाथ महाराज की जय॥

© एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

श्रीअवधूतस्तोत्रम्, वेदान्त छन्दावली से लिया गया है। वेदान्त छन्दावली, सन्त-कवि भोले बाबा द्वारा संस्कृत भाषा में रचित एक भक्तिपूर्ण कृति है। जब बाबा मुक्तानन्द ने देखा कि

वेदान्त छन्दावली के श्लोक उनके श्रीगुरु, भगवान नित्यानन्द की स्थिति का बिलकुल सटीक वर्णन करते हैं तो उन्होंने उनमें से कुछ श्लोकों का पुनर्लेखन कर, एक स्तोत्र की रचना की जिसका पाठ सिद्धयोग के आश्रमों में किया जा सके। स्तोत्र को पूर्णरूप देने के लिए, बाबा जी ने उसमें पहला और अन्तिम श्लोक जोड़ा।

यह स्तोत्र 'स्वाध्याय सुधा' पुस्तक में भी सम्मिलित है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।